जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● मोह जीतने के लिए है - स्वाध्याय, सत्संगी और आत्मचिंतन	१५	● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तर प्रवचन	६२
● जैनों को सही जनगणना क्यों करनी चाहिए ?	१९	● नरक में तो मजा ही मजा	६३
● सम्यग्दर्शन याने सत्यदर्शन	२०	● वैराग्य वाणी	६४
● गुरु आनंद तीर्थ - चिचोंडी	२१	● अच्छी बातें	६५
● कव्हर तपशील	२४	● इंद्र का ऐश्वर्य बहुत छोटा है	६६
● समाज हित में आत्मचिंतन की धारा	२५	● लू और गर्मी से कैसें बचे ?	६७
● देलवाडा आबू तीर्थ	३१	● निकष करियर निवडीचे	६८
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : लक्ष्मी की चंचलता	३५	● Secret of the day - Father's Day	६९
● Password - पासवर्ड	३७	● माझा अंतर्यामि देव	७०
● बुध्दिनिधान अभयकुमार : प्रकरण ३ रे	४१	● आगमिक साहित्यातील तत्कालीन समाज	७५
● सुविचार	४५	● हास्य जागृति	७८
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : घुल मिलकर रह	४६	● जैन सांस्कृतीक भवन - रांजणगांव	७९
● समृद्धि : मैत्री भाव	४७	● सूर्यदत्त ग्रुप, पुणे	८०
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	४९	● शाकाहारीयों के लिए डिग्री - व्हेज डिग्री	८१
● अजब गुरु-शिष्य की जोडी	५१	● जैन समाजासाठी स्वतंत्र महामंडळ स्थापन करणार	८७
● सवाल में ही जवाब	६१	● ज्येष्ठांनाही आरोग्य विमा	८८
		● भगवान महावीर - डाक तिकीट सिक्का	८९
		● जीत परिवार शैक्षणिक साहयता	८९

- श्री. बालचंदजी मालू – दीक्षा ९२
- ऑल इंडिया जैन कटारिया फाउंडेशन ९२
- चि. रितीष बाफना – विश्व विक्रमात नोंद ९३
- प्रा. जवाहर मुथा – पुरस्कार ९३
- दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट, पुणे ९५
- श्री. विजयकुमारजी मर्लेचा, पुणे ९६
- नवकार मंत्र लेखन स्पर्धा ९७
- व्ही.व्ही.इन्व्हेस्टमेंट, पुणे ९७
- व्यापारी एकता दिवस, पुणे ९९
- श्री. भगवानदासजी सुंगधी – विक्रम ९९
- जगता आलं पाहिजे १००
- सुरक्षा : हमें आपकी जरुरत है ? १०१
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. Google Pay - Mob. : 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

मोह जीतने के लिए है – स्वाध्याय, सत्संगति और आत्मचिन्तन

लेखक : आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा.

स्व-स्वभाव में रमण करनेवाले सिद्ध भगवन्त, ज्ञान गुण को साकार करनेवाले अरिहन्त भगवन्त तथा ज्ञान की साधना को प्रधानता देकर स्वाध्याय की साधना, संयम की आराधना करनेवाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

बन्धुओ!

''मोह सब कर्मों का राजा हैं'' इस विषय पर आप बात सुन रहे थे। प्रश्न है – मोह को तोड़ा कैसे जाये? आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) के शब्दों में कहूँ – मोह तोड़ने के लिए स्वाध्याय, सत्संगति और आत्मचिन्तन चाहिए। मोह-माया तोडने के लिए तीन उपाय बताए जा रहे हैं। पहला उपाय है – स्वाध्याय। दर्द भरे शब्दों में तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनिजी ने बहुत कुछ कह दिया। मैं दर्द के साथ कुछ कड़वी बात कहूँ – आचार्य भगवन्त ने जीवन भर स्वाध्याय के लिए जोर दिया, उनके भक्त क्या कर रहे है? मैं बोलूँ या आप चिन्तन कर लेंगे?

क्या आपने खाना छोड़ दिया? क्या आपने सोना छोड़ दिया? कमाना छोड़ दिया? परिवार का पोषण छोड़ दिया? क्या क्या छोड़ा है? आपने न खाना छोड़ा है, न सोना। कमाना आपका ज्यों का त्यों चल रहा है, परिवार की परवरिश में भी कोई कमी नहीं है। आप सब कुछ करते हैं, कर रहे हैं तो फिर स्वाध्याय करना क्यों छोड़ दिया?

कहने में तो आप और हम, मोह तोड़ने की बात कहते हैं, पर काम मोह जोड़ने का करें तो? आपको चातुर्मास के चार महिने ही नहीं, छः सात महिने हो गए सुनते-सुनते। इतना सुनने के बाद क्या आपकी भावना स्वाध्याय करने की जगी है? कितने भाई-बहिन हैं जो पन्द्रह मिनट स्वाध्याय किए बिना अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे? हैं नियम ऐसा? नियम नहीं तो सुनने और सुनाने का क्या फायदा?

आप सुनते हैं लेकिन सुनने के लिए नहीं। आप यह सोच कर कि चातुर्मास करवाया है, व्याख्यान में जाकर नहीं सुनेंगे तो अच्छा नहीं लगेगा। आपका सुनना चातुर्मास की लाज रखने के लिए है, रिवाज निभाने के लिए है तो कहना होगा – आपका सुनना जीवन बनाने के लिए नहीं है, केवल और केवल दिखाने के लिए है।

स्वाध्याय करते-करते धर्मदासजी महाराज जग गए। स्वाध्याय करते-करते धन्नाजी महाराज जग गए। स्वाध्याय से कई लोगों में जागृति आई है। स्थानकवासी परम्परा का इतिहास जाननेवाले, युग-प्रधान आचार्य धर्मदासजी महाराज के नाम से परिचित हैं। आपको जैसे गुरु की संगति मिल रही है, उनको वैसे गुरु की संगति नहीं मिली। फिर वे कैसे जगे? उनके जगने का कारण था – स्वाध्याय। आज भी एक परम्परा में रिवाज है कि पन्द्रह मिनट स्वाध्याय किए बिना अन्न-जल ग्रहण नहीं करना।

दूणी के पास एक गाँव है – आवाँ। वहाँ दिगम्बर परम्परा के ताराचन्दजी बगेरवाल स्वाध्यायी थे, नित्य प्रति स्वाध्याय करते थे। वे रिवाज के लिए नहीं, मान्यता निभाने के लिए नहीं किन्तु स्वाध्याय करते-करते उनका चिन्तन चला और उनको वैराग्य आ गया। उनका पढ़ना, पढ़ने के लिए नहीं, किन्तु आत्म-जागृति के लिए था।

आज लाखों बच्चे पढ़ते हैं। बहुत से बच्चे-बच्चियों का पढ़ने के लिए पढ़ना नहीं होता, उनका पढ़ना डिग्री लेने के लिए होता है। डिग्री लेने के लिए जो पढ़ता है, डिग्री मिल जाने के बाद उसका पढ़ना

क्यों छूट गया? कुछ हैं जो शास्त्रार्थ के लिए भी पढ़ते हैं। शास्त्रार्थ हो गया, पढ़ना बन्द। पर, जो पढ़े हुए को जीवन में उतारने के लिए पढ़ते हैं उनका पढ़ना बन्द नहीं होता। उनका शास्त्र-स्वाध्याय निरन्तर चलता रहता है।

ताराचन्दजी बगेरवाल को शास्त्र-स्वाध्याय करते-करते वैराग्य आ गया। उन्होंने निश्चय कर लिया-अब मुझे घर में नहीं रहना। उनके दो लड़के थे। एक का नाम था - भुवन, दुसरा था - नन्दलाल। ताराचन्दजी ने अपने पुत्रों के सामने बात रखी कि ''अब तुम घर गृहस्थी संभालो। मुझे दीक्षा लेनी हैं, मैं दीक्षा लूँगा।'' पिता ने बच्चों के सामने कहा - ''भटकते हुए मुझे अनादि काल हो गया, अब मुझे नहीं भटकना। भटकने से मेरी आत्मा में तड़फन है।'' पुत्रों ने कहा - ''पिताश्री! आप भटकना नहीं चाहते, यह अच्छी बात है। आप हमको इस भटकन में छोड़कर क्यों जाना चाहते हैं?'' दोनों बच्चों ने अपना अभिमत बताते हुए स्पष्ट कर दिया कि जहाँ आप, वहाँ हम। आप दीक्षित होते हैं तो हम भी दीक्षा लेंगे, साथ चलेंगे। बाप-बेटे तीनों घर पर पहुँचे। ताराचन्दजी ने अपनी पत्नी से कहा - ''मैं दीक्षा लेने को जा रहा हूँ।'' पिता की बात पूरी होने पर लड़को ने भी कह दिया कि हम भी पिताजी के साथ दीक्षित होने जा रहे हैं।

आप जरा अन्दाज तो कीजिए - बाप बेटे दीक्षा लेने की बात कहें तो माँ की क्या हालत हुई होगी? माँ ने तब कहा - ''फिर मेरा कौन?'' पत्नी ने पतिदेव से कहा - ''आप जाते हैं तो जाएँ किन्तु बच्चों को यहाँ छोड़ दें। अगर बच्चे जाना चाहें तो आप रुक जाएँ। मेरे लिए कोई तो सहारा चाहिये?'' ताराचन्दजी ने कहा - ''मैं तो दीक्षित होने जाऊँगा ही। तू तेरे बच्चों को समझा सकती है तो समझाकर रोक ले।'' माता ने बच्चों को रोकने का भरसक प्रयास किया पर बच्चे टस से मस नहीं हुए।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि स्वाध्याय करते-करते ताराचन्दजी को वैराग्य आ गया। आप में से कई स्वाध्यायी हैं, आपको सत्संग का सुयोग भी मिल रहा है, अभी आप सत्संग सेवा में बैठे हैं इतना सब कुछ होते हुए भी आपमें से किसी को वैराग्य आया क्या?

आप अपना जवाब नहीं दे रहे हैं। मैं पुरानी बात कह रहा हूँ। यह बात है वि. स. १८९४ की। यह उस समय की बात है जब एक पैसे में पेट भरता था। भूँगडे खाकर नहीं, जलेबी खाकर पेट भरता था।

दो रुपये लेकर पिता और दो पुत्र, तीनों घर से निकल गए। उनके समक्ष प्रश्न था - दीक्षा कहाँ ले। गुरु किसे बनाएँ, गुरु कहाँ मिलेगा?

उनको न गुरु का सुयोग मिला और न ही गुरु की जानकारी ही थी। आपको यदि वैराग्य आए तो आपके गुरु हैं। आपको पूछ लिया जाय तो आप बता भी देंगे कि दीक्षा लेंगे तो इस परम्परा में, अमुक गुरु के पास में। अभी तो आप गुरु सान्निध्य में वीतराग वाणी सुनते हुए सामायिक-साधना में बैठे है पर यदि आप नींद में भी हों और कोई आपसे गुरु का नाम पूछे तो बता देंगे कि ये मेरे गुरु हैं। पर, ताराचन्दजी और उनके दोनों बेटों को पता नहीं कि दीक्षा कहाँ ले, गुरु किसे बनाएँ?

समस्या के समाधान में बाप-बेटे का एक चातुर्मास में कहीं दो दिन, कहीं चार दिन रहकर गुरु की खोज करते रहे। खोज करते-करते पर्युषण पूरे हो गए। आश्विन का महिना आ गया। उन्होंने देखा और अनुभव किया, तो पाया कि कहीं आडम्बर है तो कहीं ज्ञान नहीं, कहीं क्रिया नहीं तो कहीं संतो में प्रकृति का मेल नहीं।

गुरु की खोज में घूमते-घूमते वे पाली पहुँचते हैं। पाली में वे पूज्य धीरजऋषि के चरणों में उपस्थित हुए। वहीं व्याख्यान सुना। कुछ घंटे रहे। मन लग गया।

सोचा, यहाँ रहा जा सकता है। दो दिन रुकने के बाद उन्होंने मुनिश्री के समक्ष दीक्षा लेने की भावना रखी। स्वामीजी महाराज ने उनकी दिनचर्या देखी, उनकी वैराग्य भावना परखी और पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज से आज्ञा मँगवाई। आज्ञा मिल जाने पर उनकी दीक्षा हो गई।

दीक्षा लेकर नवदीक्षित ताराचन्दमुनि स्वाध्याय, ध्यान और आत्मचिन्तन में लग गए। उस समय शायद ऐसी परिस्थितियाँ नहीं थी, जो आज है। मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि दिन भर में पचासों बार मांगलिक सुनानी पड़ती है। कुछ तो ऐसे भक्त भी हैं जो बड़ी मांगलिक सुनाने की बात कहते हैं। कई हैं जो आते ही कहते हैं बाबजी! मांगलिक फरमाओ। कुछ हैं जो अपना परिचय देते कहते हैं कि मैं अमुक जगह रहता हूँ, अमुक जगह से आया हूँ, मुझे मांगलिक सुनाओ। कुछ ऐसे भी आते हैं, जो आने के साथ कहते हैं- मैं बीमार हूँ, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, आप मांगलिक सुनाओ। जो बीमार हैं या जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, उन्होंने कहीं महाराज को डॉक्टर तो नहीं समझ लिया? मुझे इतना ही कहना है कि हमारे भक्तों ने महाराज को मांगलिक देने की मशीन तो नहीं मान लिया?

मेरी बात कड़वी लग सकती है। ताराचन्दजी ने और उनके दोनों पुत्रों ने दीक्षा ले ली। ताराचन्दजी तपस्वी संतरत्न थे। नन्दलालजी तार्किक संत थे। उस समय स्वाध्याय के लिए लिखे हुए शास्त्र कम मिलते थे, टब्बा चूर्णी के माध्यम से स्वाध्याय किया जाता था। आज हमारे स्वाध्याय में न जाने कितनी बार व्यवधान आता है। ज्ञान करने वालों को विघ्न बाधाओं का सामना करना होता है। हमारे श्रावक स्वयं तो स्वाध्याय करते नहीं और हम जो स्वाध्याय करना चाहते हैं, उनको सहयोग देने के बजाय बाधा पहुँचाने वाले लोग ज्यादा हैं। मैं कठोर शब्दों में इसलिए कह रहा हूँ कि आप हमारी दिनचर्या में सहयोगी बनें। आप स्वयं स्वाध्याय करें, सत्संगति में रहें, आत्मभाव जगाएँ। जोधपुर का यह चातुर्मास अच्छा रहा, यह बात हर आदमी से सुन रहा हूँ पर आप अपना चिन्तन करें कि आपने चातुर्मास का सुयोग पाकर क्या किया?

आपको कई बार प्रेरणा की जा चुकी है, आज फिर से में याद दिला रहा हूँ कि चातुर्मास पश्चात् भी हर दिन सामायिक स्वाध्याय भवन में प्रतिदिन, सामायिक-स्वाध्याय के साथ, संवर-साधना चले। आपके पास जो भी स्थानक हैं, जो भी धर्म स्थान आपके पास है वहाँ जाकर धर्म-क्रिया करने का रूप रहेगा तो हर धर्म-स्थान हरा-भरा नजर आएगा। धर्म स्थान में धर्म-साधना करने वाले लोग पहुँचते रहेंगे तो लोगों को समझ में आएगा कि यहाँ चातुर्मास हुआ था। कई भाई प्रयास कर भी रहे हैं लेकिन प्रयास करने वाले थोड़े हैं, मनुहार करवाने वाले ज्यादा हैं। आप सामायिक, स्वाध्याय, सँवर जो भी क्रिया करें वह मोह को जीतने के लिए होनी चाहिए। आप मोह जीतने का प्रयास करेंगे तो आपका सुनना और हमारा सुनाना सार्थक होगा। ●

सदाचार व सद्विचारांच्या माध्यमातून गत ५५ वर्षे अखंडपणे...
जिनवाणी व जैन समाजाची सेवा करणारे
भारत वर्षातील एक श्रेष्ठ, लोकप्रिय मासिक - जैन जागृति

गुरु आनंद तीर्थ – चिचोंडी

*** वर्षीतप पारणे * जिनेश्वरी पारायण सप्ताह * विविध भवनाचे भूमीशुध्दीकरण * वृक्षारोपन**

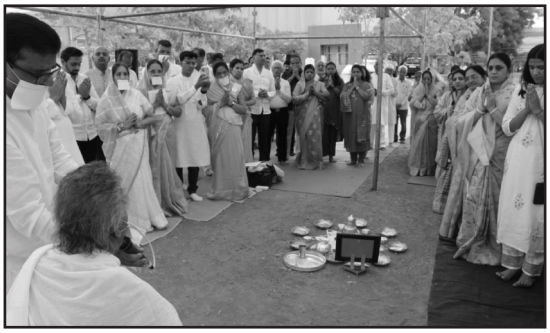

आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी चिचोंडी, जि. अहमदनगर येथे गुरु आनंद फाऊंडेशन द्वारा भव्य गुरु आनंद तीर्थ उभारणेचे काम संपन्न होत आहे. मे महिन्यात आनंद तीर्थ उपाध्याय प्रवर श्री प्रविणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा व साध्वी म.सा. यांच्या पावन निश्रेत वर्षीतप पारणे, जिनेश्वर पारायण सप्ताह, विविध भवनाचे भूमि शुद्धीकरण, वृक्षारोपण इत्यादी कार्यक्रम संपन्न झाले.

साध्वी साधना केंद्र हे पुणे येथील प्रतिष्ठीत उद्योगपती, निष्ठावंत गुरुभक्त श्री. रमणलालजी कपुरचंदजी लुंकड परिवाराच्या सहयोगाने निर्मीत होत आहे. अर्हम तीर्थ असे तीर्थ जिथे येणाऱ्या गुरुभक्तांना बाराही महिने अर्हम विधीचा, तंत्राचा लाभ मिळेल. हे तीर्थ देशभरातील समस्त गुगळे परीवराच्या सहयोगातून निर्मीत होत आहे. श्रमण साधना केंद्र व ऑडीटोरीयम हे गुरुभक्तांच्या समर्पणातून निर्मीत होत आहे.

अर्हम विज्जा फाउंडेशनच्या माध्यमातून उपाध्याय श्री प्रविणऋषिजींच्या प्रगल्भ, सखोल मार्गदर्शनात चालणाऱ्या विविध साधनांचा लाभ भारतातच नाही विदेशातील लाखो लोक घेत आहेत. अशा या सर्व उपक्रमांचा अभ्यास, रसिर्च, मार्गदर्शन करण्याहेतू अर्हम विज्जा युनिव्हर्सिटीचे निर्माण होत आहे. यासाठी आनंद तीर्थ चॅरिटेबल ट्रस्ट पुणे चे वतीने ट्रस्टी श्री. पोपटलालजी ओस्तवाल व श्री. राजकुमारजी चोरडीया यांनी ट्रस्टची सुमारे १५ एकर जागा अर्हम विज्जा फाउंडेशनला उपलब्ध करुन दिली. येत्या ७ महिन्यात हे सर्व प्रकल्प पुर्ण निर्मीत होऊन गुरुभक्तांसाठी सज्ज होणार आहे. अशा या तीर्थाकडे आज सर्वांचे डोळे लागले आहे व डोळ्यांचे पारणे फेडणारे असे हे तीर्थ खुप लवकर समाज समर्पणासाठी सुसज्ज होणार आहे.

दि. १० एप्रिल रोजी चिचोंडी गुरु आनंद तीर्थ येथे दरवर्षी प्रमाणे हजारो गुरुभक्तांच्या उपस्थित १३० वर्षीतप तपस्वींचे पारणे संपन्न झाले. उपाध्याय प्रवीणऋषिजी श्री मुखाने तपस्वींची आलोचना व अतिशय दिमाखात शाही व्यवस्थेत तपस्वींचे पारणे

झाले. या प्रसंगी उत्तम वक्ता श्री लोकेशऋषीजी म.सा, मधुरकंठी श्री तीर्थेशऋषिजी म.सा. साध्वी रत्ना श्री प्रीतीदर्शनाची, श्री प्रशमदर्शनाजी म.सा. आदी ठाणा ५ चे मंगल सान्निध्य लाभले. दरवर्षी प्रमाणे पारणोत्सवा आधी तपस्वींची शोभायात्रा स्थानकापासून गुरु आनंद तीर्थ पर्यंत काढण्यात आली. या शोभायात्रेची सांगता लोझीम, गरबा अशा अनेक सांस्कृतीक प्रस्तुतीने झाली.

दि. ११ एप्रिल ते १७ एप्रिल दरम्यान २४ वे तीर्थंकर भगवान महावीरांचे अंतिम वरदान, अंतिम वचन असलेले ग्रंथ श्रीमद् उत्तराध्ययन सुत्राचे सविवेचन पारायण 'जिनेश्वरी पारायण सप्ताह' या स्वरुपात करण्यात आले. ज्यांच्या रोमरोमात प्रभू महावीर बसलेले आहेत अशा उपाध्यायश्रींच्या श्रीमुखातून निरंतर सात दिवस सकाळी ७ ते १० व दुपारी २ ते ५ या वेळेत अमृतवाणीचा वर्षाव झाला. सुमारे ६०० पेक्षा जास्त बंधु-भगिनी सात दिवस प्रति दिवस मंत्रमुग्ध होऊन ऐकत राहिले. सोबत प्रत्येक अध्यायाचे साररुप भजन श्री तीर्थेशऋषिजी व महासती ओजसदर्शनाजी म.सा. मधूर वाणीतून प्रस्तूत झाल्याने या पारायणाचा गोडवा वाढला. या प्रसंगी ३-४ दिवस महासती डॉ. ज्ञानप्रभाजी महाराजांचा शीष्यसमुहानी उपिस्थती लावून कार्यक्रमाची शोभा वाढवली.

अशा या अभुतपूर्व प्रथमच झालेल्या जिनेश्वरी पारायण सप्ताहात येणारा प्रत्येक गुरुभक्त या अमृतपानाने ओतप्रोत झाला. या पारायण सप्ताहाचे नियोजन आकुर्डी येथील श्री. रोहनजी राजेंद्रजी मुनोत व त्यांच्या टीमद्वारे अतिशय कुशलतेने करण्यात आले. त्यामुळे आजच्या या तीव्र उष्णतेच्या दिवसात अमृतपानाचा थंडावा सर्वांना घेता आला. या सर्व कार्यक्रमात गुरु आनंद फाउंडेशनचे सर्व विश्वस्त, आनंदतीर्थ लोकल कमीटी समस्त पंचक्रोशीतील गुरुभक्तांचे सेवा - परीश्रम लाभले.

महापुरुषांच जीवन पाण्याच्या धारेसारखं असत जी आधी एकदम छोटी असते, ती वाढत जाऊन पुढे सागर बनतो. गंगोत्री गंगासागराचे रुप घेते त्याप्रमाणे महापुरुषांचे जीवन सुरुवातीला छोटे असते ते वाढत जाऊन विराट होते व शेवटी अनंत होते अशा महापुरुषांकडून झालेले कार्य विश्वव्यापी बनत त्यांनी केलेले चिंतन संपूर्ण विश्वासाठी उपयोगी ठरत व हे महापुरुष विश्वाच प्रतिनिधीत्व करतात, विश्वाला मार्गदर्शन करतात. असेचे आजच्या युगातील एक महापुरुष आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषिजी महाराज... ज्यांच कर्तृत्व हिमालयासारखं व करुणा सागरासारखी अशा महापुरुषाचा श्रमण आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराजांचा जन्म ज्या गावी झाला ती चिचोंडी त्यांच्या पदस्पर्शाने पावन झाली. अशा पावन उर्जेने संपन्न चिचोंडीत दुसरे महापुरुष व त्यांचेच सुशिष्य उपाध्याय श्री प्रविणऋषिजी महाराजांच्या प्रेरणा व कुशल मार्गदर्शनात 'गुरु आनंद तीर्थ' हे भव्यदिव्य तीर्थ उभारणीचे काम गुरु आनंद फाउंडेशन द्वारे सुरु झाले. यातील पहिल्या टप्प्याचा लोकार्पण समारोह १७ डिसेंबर २०१७ रोजी पार पडला. केवळ धार्मिकच नाही तर मानव सेवा, समाज प्रबोधन, शिक्षण, व्यक्ती, समाज विकास कल्याणार्थ अनेक प्रयोजनातून येथे सप्ततीर्थ निर्मिती होत आहे. यामध्ये आतापर्यंत गुरुचरण तीर्थ, साधु भवन, साध्वी भवन, भक्त निवास, भोजनशाला पूर्ण झाले असून नवकार कलश तीर्थ गौतमलब्धी कलश, श्रुतपीठ, पुरुषाकार - अष्टमंगल ध्यान केंद्र गर्भसंस्कार केंद्र, संलेखना केंद्र, आदींचे निर्मिती कार्य प्रगतीशील आहे.

दि. १८ मे २०२४ रोजी चतुर्विध शासन स्थापना दिवशी साधु-साध्वी साधना केंद्र, ऑडीटोरियम एवं कार्यालय और अर्हम तीर्थ इ. या भुमीशुद्धीकरण तथा अर्हम विज्जा युनिव्हर्सिटी के नियोजीत स्थानपर वृक्षारोपण चा कार्यक्रम हजारो गुरुभक्तांच्या उपस्थित संपन्न झाला. ●

कव्हर तपशील - जून २०२४

❖ **आबू तीर्थ, राजस्थान**
राजस्थान आबू येथील जग प्रसिद्ध तीर्थ देलवाडा जैन मंदिरचा लेख पान नं. ३१ वर दिला आहे.

❖ **गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी**
आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी चिचोंडी, अहमदनगर येथे भव्य गुरु आनंद तीर्थ उभारण्याचे काम संपन्न होत आहे. मे महिन्यात येथे वर्षीतप पारणे, जिनेश्वरी परायण सप्ताह, विविध भवनाचे भूमी शुद्धीकरण, वृक्षारोपन इ. कार्यक्रम संपन्न झाले. (बातमी पान नं. २१)

❖ **जैन सांस्कृतिक भवन, रांजणगाव गणपती**
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ रांजणगांव गणपती, जिल्हा पुणे निर्मित बहुउद्देशीय नूतन वास्तु भामाशाह श्रीमान रसीकलालजी एम. धारिवाल जैन सांस्कृतीक भवन चे उद्घाटन दानशूर श्रीमान प्रकाशजी रसीकलालजी धारिवाल यांचे हस्ते दि. २६ एप्रिल २०२४ रोजी संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ७५)

❖ **जैन समाजासाठी स्वतंत्र महामंडळ**
अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यांक महासंघाने केलेल्या मागणी अनुसार जैन समाजासाठी स्वतंत्र महामंडळ स्थापण्याचा निर्णय सरकार घेईल अशी घोषणा मुख्यमंत्री एकनाथजी शिंदे यांनी केली.
(बातमी पान नं. ८७)

❖ **श्री. भगवानदासजी सुंगधी – विक्रम**
पुणे येथील भगवानदासजी चुनीलालजी सुंगधी यांनी २५ मे रोजी सतत १५ तास नवकार मंत्र लिहिण्याचा विक्रम केला आहे.
(बातमी पान नं. ९९)

❖ **चि. रिषीत बाफना – विश्व विक्रम**
पुणे शहरातील संजय मोहनलालजी बाफना यांचा नातू रिषीत सागर बाफना (वय २ वर्ष) याने अवघ्या चाळीस सेकंदात ५३ अफ्रिकन देशांची नावे फडफड सांगून ओ. एम. जी बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्डस् २०२४-२५ मध्ये आपल्या अचाट बुद्धिमत्तेने स्वतःचे नाव कोरले आहे.
(बातमी पान नं. ९३)

❖ **श्री. विजयकुमारजी – सौ. सुशीलाजी मर्लेचा लग्नाचा सुवर्ण महोत्सव**
पुणे येथील सुकांता थाळीचे संचालक व धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. विजयकुमारजी मोतिलालजी मर्लेचा व त्यांच्या पत्नी सौ. सुशीला मर्लेचा यांचा लग्नाचा सुवर्ण महोत्सवी वाढदिवस २२ मे रोजी वर्धमान सांस्कृतिक केंद्र, पुणे येथे अति भव्य कार्यक्रमात साजरा करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९९)

❖ **व्यापारी एकता दिवस – व्यापाराचा सन्मान**
२५ मे व्यापारी एकता दिवस निमित्त पुण्यातील विविध क्षेत्रातील ११ व्यापारांचा सन्मान पूना मर्चंट चेंबरचे मा. अध्यक्ष व नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले यांच्या तर्फे करण्यात आले.
(बातमी पान नं. ९९)

❖ **व्ही.व्ही.एस. इन्व्हेस्टमेंट प्रा. लि. – उद्घाटन**
पुणे येथील चि. विरेन विजयजी धोका यांचा व्ही.व्ही.एम. इन्व्हेस्टमेंट प्रा. लि. या कंपनीचा गंगाधाम चौकातील ऑफीसचे उद्घाटन २५ मे रोजी संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ९७)

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...

जैन जागृति